

प्रारंभिक परीक्षा

अन्नामलाई टाइगर रिजर्व(ATR)

संदर्भ

मानसून सीजन से पहले अन्नामलाई टाइगर रिजर्व (ATR) के पोलाची और तिरुप्पुर डिवीजनों में बाघों और अन्य वन्यजीवों की गिनती शुरू हो गई है।

अन्नामलाई टाइगर रिजर्व के बारे में -

- **स्थापना:** इसे आधिकारिक तौर पर 1974 में अन्नामलाई वन्यजीव अभयारण्य के रूप में नामित किया गया था।
 - इसके बाद 1987 में इसका नाम बदलकर इंदिरा गांधी वन्यजीव अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान कर दिया गया।
 - **सन् 2007 में इसे टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।**
- **स्थान:** कोयम्बटूर, तमिलनाडु।
 - पूर्व में परम्बिकुलम टाइगर रिजर्व, दक्षिण-पश्चिमी ओर चिन्नार वन्यजीव अभयारण्य और एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान से घिरा हुआ है।
- **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल स्थित हैं:** करियन शोला, ग्रास हिल्स, और मंजमपट्टी।
- **स्वदेशी जनजातियाँ:** मालासर, मुदुवार और कादर।



स्रोत: [The Hindu: Pre-monsoon wildlife census begins at Anamalai reserve](#)

वृथि(Vruthi)

संदर्भ

2 अक्टूबर, 2024 से, केरल आक्रामक रूप से अपने नवीनतम अभियान - 'वृथि' की वकालत कर रहा है।

वृथि का क्या अर्थ है?

- मलयालम में वृथि शब्द का अर्थ है शरीर और मन दोनों की स्वच्छता।
- यह एक जन-केंद्रित व्यवहारिक आंदोलन है जो व्यापक जन भागीदारी के माध्यम से कचरा मुक्त, स्वच्छ केरल के लक्ष्य को प्राप्त करने पर केंद्रित है।
- यह अभियान 'मालिन्य मुक्तम नव केरलम' (अपशिष्ट मुक्त नया केरल) नामक एक व्यापक पहल का हिस्सा है।

'वृथि' (केरल का अभियान) और स्वच्छ भारत मिशन (SBM) की तुलना

पहलू	वृथि (केरल)	स्वच्छ भारत मिशन (SBM)
द्वारा लॉन्च किया गया	केरल राज्य सरकार	भारत सरकार
आरंभ करने की तिथि	2 अक्टूबर, 2024	2 अक्टूबर 2014
फोकस क्षेत्र	व्यवहार परिवर्तन, विकेंद्रीकृत अपशिष्ट समाधान, स्थानीय शासन	स्वच्छता अवसंरचना (शौचालय, उपचार संयंत्र), आपूर्ति-संचालित मॉडल
दृष्टिकोण	नीचे से ऊपर, सहभागी, संदर्भ-विशिष्ट	ऊपर से नीचे, लक्ष्य-आधारित, केन्द्रीकृत डिजाइन
प्रमुख अभियान	मालिन्य मुक्तम नव केरलम (अपशिष्ट-मुक्त केरल)	स्वच्छ भारत मिशन चरण 1 और 2 (ग्रामीण और शहरी)
प्रौद्योगिकी अभिविन्यास	प्रौद्योगिकी-तटस्थ, विकेंद्रीकृत और अनुकूलनीय	प्रौद्योगिकी-विशिष्ट (उपचार संयंत्र, शौचालय, आदि)
सामुदायिक भागीदारी	उच्च - इसमें स्थानीय निकाय, छात्र, नागरिक समाज, कलाकार, सफाई कर्मचारी शामिल हैं	मध्यम - जैविक भागीदारी की तुलना में सरकारी कार्यान्वयन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया
नारा	"मेरा कचरा, मेरी जिम्मेदारी"	"एक कदम स्वच्छता की ओर"
संस्थागत समर्थन	स्थानीय स्वशासन (पंचायत, नगर पालिका) की सशक्त भूमिका	अधिक नौकरशाही, केन्द्रीकृत निगरानी
चुनौतियाँ संबोधित	जूनोटिक रोग, सार्वजनिक अपशिष्ट, सफाई कर्मचारी सुरक्षा, विकेंद्रीकरण अंतराल	खुले में शौच, शौचालयों की कमी, बुनियादी स्वच्छता अवसंरचना का अभाव

स्रोत: [The Hindu: How is Kerala handling its waste problem?](#)

डिजिटल बैंकिंग इकाइयाँ (DBUs)

संदर्भ

DBU की शुरुआत के दो वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद भी, ऋणदाताओं ने देश भर में इन इकाइयों के विस्तार में बहुत कम या कोई प्रगति नहीं की है।

DBU क्या हैं?

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के अनुसार, **DBU** "एक विशिष्ट निश्चित-बिंदु व्यवसाय इकाई/हब है, जिसमें डिजिटल बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं को वितरित करने के साथ-साथ मौजूदा वित्तीय उत्पादों और सेवाओं को डिजिटल रूप से, स्व-सेवा और सहायता प्राप्त दोनों तरीकों से सेवा प्रदान करने के लिए कुछ न्यूनतम डिजिटल बुनियादी ढांचे की सुविधा होती है।"
- **लॉन्च:** 16 अक्टूबर, 2022, आज़ादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में।
- **DBU की मुख्य विशेषताएं:**
 - **उद्देश्य:** सुरक्षित, कागज रहित और कुशल तरीके से 24x7 डिजिटल बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना।
 - **सेवा का तरीका:** स्वयं सेवा (जैसे कियोस्क, एटीएम) और सहायता प्राप्त सेवा (कर्मचारी सहायता प्राप्त डिजिटल सेवाएं)।
 - **पहुंच:** धन हस्तांतरण, ऋण, शिकायत निवारण और डिजिटल बैंकिंग शिक्षा जैसी सेवाओं तक वर्ष भर पहुंच।
 - **लक्ष्य:** सभी क्षेत्रों, विशेषकर वंचित क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन और डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना।



स्रोत: [The Hindu: Why digital banking units never picked up in India](#)

समाचार संक्षेप में

वन्नियार समुदाय

समाचार? आरोप लगाया गया कि राज्य के मुख्यमंत्री ने अति पिछड़ा वर्ग (MBC) कोटे में आंतरिक आरक्षण देने से इनकार करके वन्नियार समुदाय के साथ विश्वासघात किया है।

वन्नियार समुदाय के बारे में -

- **पाया जाता है:** तमिलनाडु के उत्तरी भाग में।
- **पूर्व नाम:** पल्ली
- **स्थिति:** सबसे पिछड़ा समुदाय (MBC)
- **राजनीतिक प्रभाव:** पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) राजनीतिक दल की स्थापना 1989 में हुई थी।
- **संबंधित मुद्दे:** राज्य सरकार द्वारा 2021 में पारित एक कानून ने वन्नियारों के लिए 10.5% आंतरिक आरक्षण प्रदान किया।
 - हालाँकि, सुप्रीम कोर्ट ने 2022 में इस कानून को रद्द कर दिया।

कुल प्रजनन दर

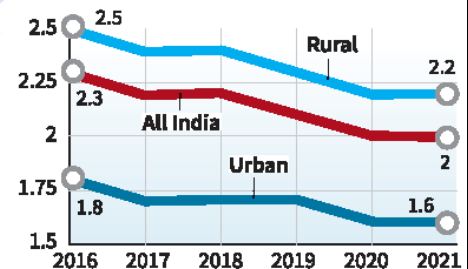
समाचार? भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) 2021 में 2.0 पर बनी हुई है (2020 के समान) जैसा कि भारत के रजिस्ट्रार-जनरल (आरजीआई) द्वारा जारी 2021 के लिए नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS) रिपोर्ट से पता चलता है।

TFR का क्या मतलब है?

- **कुल प्रजनन दर (TFR)** से यह अनुमान लगाया जाता है कि एक महिला अपने जीवनकाल में औसतन कितने बच्चे पैदा करेगी।
- इसकी गणना इस धारणा के आधार पर की जाती है कि एक महिला अपने संपूर्ण प्रजनन जीवनकाल (आमतौर पर 15 से 49 वर्ष की आयु) के दौरान वर्तमान आयु-विशिष्ट प्रजनन दर (प्रत्येक आयु वर्ग में जन्म दर) का अनुभव करती है और उन वर्षों तक जीवित रहती है।

संबंधित तथ्य -

- **उच्चतम TFR:** बिहार (3.0)
- **सबसे कम (1.4):** दिल्ली, पश्चिम बंगाल
- **जनसांख्यिकीय आयु संरचना (1971-2021):**
 - **0-14 वर्ष:** 41.2% (1971) से घटकर 24.8% (2021)
 - **15-59 वर्ष** (कार्यशील आयु समूह): 53.4% से बढ़कर 66.2% हुआ
 - **60+ वर्ष:** 6% से बढ़कर 9% किया गया
 - **65+ वर्ष:** 5.3% से बढ़कर 5.9% हुआ



संबंधित शब्द -

- प्रति महिला लगभग 2.1 बच्चों की TFR को प्रतिस्थापन-स्तर प्रजनन क्षमता कहा जाता है।

क्षुद्रग्रह YR4

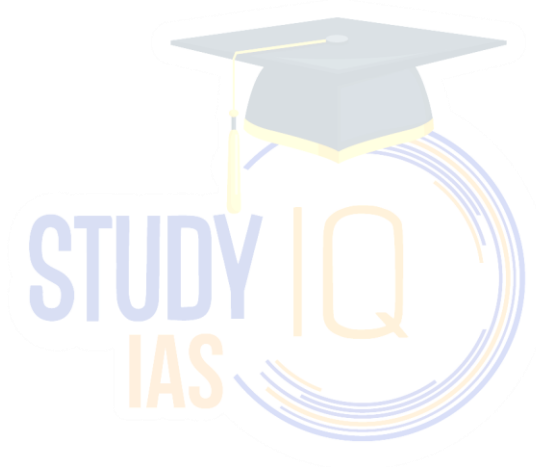
समाचार? 2 अप्रैल को नासा की घोषणा के अनुसार, क्षुद्रग्रह YR4 के 22 दिसंबर 2032 को चंद्रमा से टकराने की 3.8% संभावना है।

क्षुद्रग्रह YR4 के बारे में -

- **खोज:** दिसंबर 2024 में चिली में एटलस दूरबीन द्वारा पता लगाया गया।
- **प्रकार:** एक निकट-पृथ्वी वस्तु (NEO) और अपोलो-श्रेणी का क्षुद्रग्रह - जिसका अर्थ है कि यह पृथ्वी की कक्षा को पार करता है।
- **आकार:** अनुमानित ~65 मीटर चौड़ा - लगभग 10 मंजिला इमारत की ऊंचाई।

क्षुद्रग्रह कितनी बार पृथ्वी से टकराते हैं?

- **छोटे क्षुद्रग्रह:**
 - हजारों की संख्या में ये ग्रह पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं।
 - अधिकांश घर्षण के कारण जल जाते हैं, कभी-कभी आग के गोले के रूप में दिखाई देते हैं।
- **बड़े क्षुद्रग्रह:**
 - 1 किमी से अधिक व्यास वाले ये क्षुद्रग्रह लगभग हर 260 मिलियन वर्ष में पृथ्वी पर आते हैं।
 - सौरमंडल की विशालता के कारण क्षुद्रग्रहों का सीधा प्रभाव दुर्लभ है।
 - छोटे क्षुद्रग्रह (~ 40 मीटर) प्रवेश की गति और कोण पर निर्भर करते हुए, पूरे शहर को तबाह कर सकते हैं।



संपादकीय सारांश

वायु गुणवत्ता पहेली

संदर्भ

मेक इन इंडिया की सफलताओं के बावजूद, भारत वायु प्रदूषण से निपटने में पीछे है तथा भारतीय शहर लगातार दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार हैं।

भारत में वायु गुणवत्ता प्रबंधन से जुड़ी चुनौतियाँ -

- **अपर्याप्त उपयोग वाली धनराशि:** यद्यपि धनराशि उपलब्ध है, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड अक्सर अप्रयुक्त धनराशि लौटा देते हैं, जो संसाधन की कमी के बजाय उपयोग में अकुशलता को दर्शाता है।
- **अनुसंधान एवं विदेशी एजेंसियों पर निर्भरता:** भारत विदेशी वित्त पोषित वायु गुणवत्ता अध्ययनों और अंतर्राष्ट्रीय डेटा सेटों पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जिससे यह कमजोर हो जाता है, विशेषकर तब जब विदेशी एजेंसियां पीछे हट जाती हैं।
 - **SAFAR (2010)** जैसे स्वदेशी प्रयासों ने आशाजनक परिणाम दिखाए हैं, लेकिन अभी भी इनका पूरा उपयोग नहीं हो पाया है तथा ये केवल कुछ शहरों तक ही सीमित हैं।
- **संस्थागत चुनौतियाँ:** अनुसंधान वित्तपोषण पर अभिजात वर्ग का कब्जा व्यापक संस्थागत भागीदारी को सीमित करता है।
 - **पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन** - भारत मौसम विज्ञान विभाग (ESSO-IMD) और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) जैसी शीर्ष भारतीय एजेंसियों के बीच सहयोग अपर्याप्त है, लेकिन राष्ट्रीय स्तर के पूर्वानुमान और प्रबंधन के लिए आवश्यक है।
- **प्रदूषण के प्रति शहर-केंद्रित दृष्टिकोण:** व्यापक एयरशेड-आधारित प्रबंधन के बजाय शहर-स्तरीय समाधान पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

आगे की राह – वायु गुणवत्ता में आत्मनिर्भरता:

- एक एकीकृत, विज्ञान-आधारित वायु गुणवत्ता संसाधन ढांचा महत्वपूर्ण है।
- एनएआरएफआई (भारतीय राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता संसाधन फ्रेमवर्क) जैसी पहल का उद्देश्य एयरशेड-स्तरीय प्रबंधन, अंतर-एजेंसी समन्वय और साक्ष्य-आधारित नीति को बढ़ावा देना है।
- भारत को पर्यावरण शासन में वास्तविक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए शहर-केंद्रित से स्वास्थ्य और खाद्य-केंद्रित एयरशेड दृष्टिकोण की ओर बढ़ना होगा।

स्रोत: [Indian Express: Air Quality Puzzle](#)

विनिर्माण विकास को गति देने के लिए मूलभूत पुनर्निर्धारण

संदर्भ

नवाचार-संचालित, उच्च तकनीक विनिर्माण, अनुसंधान एवं विकास तथा उन्नत कौशल द्वारा संचालित, वर्तमान उच्च टैरिफ, विनिर्माण पुनर्निर्धारण की मांग करता है, जिसके लिए ऐसी नीतियों की आवश्यकता है जो चुनौतियों का सीधे सामना करें।

भारत को अपने विनिर्माण क्षेत्र को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता क्यों है?

- **विनिर्माण उत्पादकता में पिछड़ना:** विनिर्माण में भारत का प्रति व्यक्ति मूल्य संवर्धन \$0.32K है, जबकि वैश्विक औसत \$2K है।
 - उत्पादकता \$8.9K है जबकि वैश्विक औसत \$32K है (विश्व बैंक, 2023)।
- **उच्च तकनीक विनिर्माण की ओर वैश्विक बदलाव:** वैश्विक व्यापार नवाचार-संचालित, मध्यम और उच्च तकनीक क्षेत्रों (जैसे, सेमीकंडक्टर, रोबोटिक्स) की ओर बढ़ रहा है।
 - अनुसंधान एवं विकास तथा कौशल में आगे नहीं बढ़ता है तो उसे बस छूट जाने का खतरा है।
- **सेवा क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता:** भारत की आर्थिक वृद्धि सेवा-प्रधान है, जबकि सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण का योगदान स्थिर (~ 16-17%) है।
 - इससे रोजगार सृजन और लचीलापन सीमित हो जाता है।
- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में रणनीतिक चिंताएं:** भू-राजनीतिक बदलाव (जैसे, अमेरिका-चीन टैरिफ) आपूर्ति श्रृंखलाओं को पुनर्गठित कर रहे हैं।
 - भारत को एक विश्वसनीय विनिर्माण आधार के रूप में पुनः स्थापित होना होगा।

भारत की विनिर्माण वृद्धि में बाधा डालने वाली प्रमुख चिंताएँ -

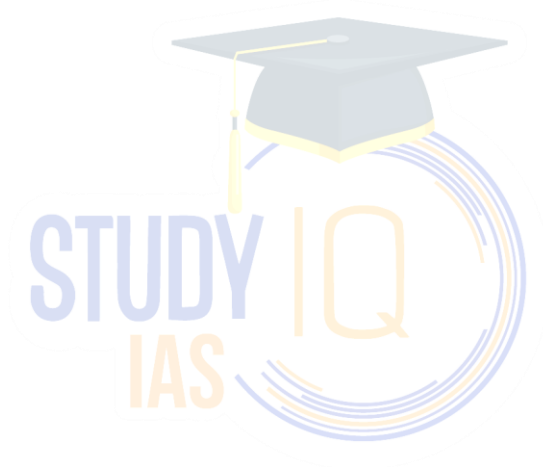
- **अनुसंधान एवं विकास में कम निवेश:** भारत का अनुसंधान एवं विकास व्यय सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 0.65% है, जबकि औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में यह 2-4% है।
- **उद्योग-अकादमिक संबंध कमजोर:** इंजीनियरिंग संस्थान ग्रेड और सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, न कि व्यावहारिक नवाचार या उद्योग की समस्याओं पर।
- **कौशल बेमेल:** तकनीकी शिक्षा और उद्योग की जरूरतों के बीच संरेखण की कमी, विशेष रूप से कोर इंजीनियरिंग कौशल में।
- **अपर्याप्त बुनियादी ढांचा:** औद्योगिक पार्क विकास में देरी, उच्च रसद लागत और प्लग-एंड-प्ले सुविधाओं की कमी।
- **नीतिगत अंतराल:** मेक इन इंडिया और पीएलआई जैसी मौजूदा योजनाओं का कवरेज सीमित है तथा राज्यों और क्षेत्रों में इनका कार्यान्वयन असमान है।

क्या किया जाने की जरूरत है -

- **अनुसंधान एवं विकास व्यय में वृद्धि:** अनुसंधान एवं विकास निवेश को सकल घरेलू उत्पाद के 2% तक बढ़ाना।
 - विनिर्माण प्रौद्योगिकियों के लिए मिशन-आधारित अनुसंधान एवं विकास केन्द्रों को बढ़ावा देना।
- **इंजीनियरिंग शिक्षा में सुधार:** व्यावहारिक प्रशिक्षण, उत्पाद डिजाइन और प्रोटोटाइपिंग पर ध्यान केंद्रित करना।
 - रचनात्मकता और समस्या समाधान को बढ़ावा देने के लिए प्रवेश और स्नातक प्रणाली को पुनः डिजाइन करना।
- **उन्नत विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण:** इन-हाउस प्रोटोटाइपिंग, परीक्षण और डिजाइन प्रयोगशालाओं के साथ राज्य-विशिष्ट विनिर्माण क्लस्टर विकसित करना।
 - विनिर्माण-केंद्रित स्टार्टअप को टूलरूम और कार्यशालाओं तक पहुंच प्रदान करके प्रोत्साहित करना।

- **कोर इंजीनियरिंग क्षेत्रों को मजबूत करना:** एआई और इलेक्ट्रॉनिक्स के साथ-साथ सिविल, मैकेनिकल, केमिकल, धातुकर्म आदि जैसे पारंपरिक क्षेत्रों को प्राथमिकता देना।
- **औद्योगिक अवसंरचना निवेश:** प्लग-एंड-प्ले औद्योगिक पार्क, लॉजिस्टिक्स और प्रमाणन प्रयोगशालाओं के विकास के लिए सकल घरेलू उत्पाद का 1% आवंटित करना।
- **नीतिगत नवाचार और निगरानी:** विशिष्ट क्षेत्रों और भौगोलिक क्षेत्रों के लिए नीतियां तैयार करना; केंद्र और राज्यों के बीच वास्तविक समय पर फीडबैक और समन्वय सुनिश्चित करना।

स्रोत: [The Hindu: A fundamental reset to drive manufacturing growth](#)



किसान चावल, गेहूं को क्यों पसंद करते हैं?

संदर्भ

जब किसानों को प्राकृतिक वर्षा के पूरक के रूप में बुनियादी सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो जाती है, तो चावल और गेहूं उनकी सबसे पसंदीदा फसलें बन जाती हैं।

किसान चावल और गेहूं की खेती क्यों पसंद करते हैं?

- **एमएसपी पर सुनिश्चित खरीद:** सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर चावल और गेहूं की लगभग गारंटीकृत खरीद प्रदान करती है, जिससे मूल्य स्थिरता मिलती है और बाजार जोखिम कम होता है।
 - यह सरकारी सहायता अधिकांश अन्य फसलों के लिए उपलब्ध नहीं है, जिससे जोखिम से बचने वाले किसानों के लिए चावल और गेहूं अधिक सुरक्षित आर्थिक दांव बन जाते हैं।
- **उपज आश्वासन और सिंचाई:** चावल और गेहूं उपज के मामले में कम जोखिमपूर्ण हैं, खासकर जब सिंचित परिस्थितियों में उगाए जाते हैं।
 - उन्हें दशकों से केंद्रित सार्वजनिक प्रजनन और अनुसंधान से लाभ मिला है, जिसके परिणामस्वरूप उपज में लगातार वृद्धि हुई है और बीमारियों और जलवायु तनावों के खिलाफ लचीलापन बढ़ा है।
- **तकनीकी प्रगति:** उच्च उपज देने वाली किस्मों (जैसे हरित क्रांति के तहत गेहूं और चावल) की लगातार लहरों ने इन फसलों को अधिक उत्पादक, विश्वसनीय और उर्वरक और पानी जैसी चीजों के प्रति संवेदनशील बना दिया है।
 - नई किस्में तेजी से पकती हैं, प्रमुख रोगों के प्रति प्रतिरोधी होती हैं, तथा उन्हें लचीले ढंग से बोया जा सकता है, जिससे जोखिम और भी कम हो जाता है।

चावल-गेहूं की निरंतर एकल खेती से चिंताएँ -

- **मृदा क्षरण:** चावल-गेहूं की गहन खेती और रासायनिक उर्वरकों के भारी उपयोग से मृदा स्वास्थ्य में गिरावट आई है, जिससे पोषक तत्वों में असंतुलन, कार्बनिक पदार्थों में कमी और संहनन हुआ है।
 - इससे दीर्घकालिक उत्पादकता प्रभावित होती है।
- **जल की कमी:** दोनों फसलें अत्यधिक जल-प्रधान हैं।
 - सिंचाई के लिए भूजल के अत्यधिक दोहन के कारण प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों में भूजल स्तर खतरनाक रूप से कम हो गया है, जिससे भविष्य में कृषि की स्थिरता को खतरा पैदा हो गया है।
- **पर्यावरण प्रदूषण:** चावल की फसल के अवशेष (पराली) को जलाना व्यापक स्तर पर होता है, जिससे गंभीर वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी खतरे उत्पन्न होते हैं।
 - इसके अतिरिक्त, उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी और जल प्रदूषित होते हैं।
- **कीट एवं रोग संबंधी समस्याएं:** एकल कृषि और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग के कारण कीट प्रतिरोध उत्पन्न हो गया है तथा पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ गया है, जिसके कारण अधिक मजबूत रासायनिक नियंत्रण की आवश्यकता है।
- **आर्थिक एवं पोषण असंतुलन:** चावल और गेहूं पर ध्यान केन्द्रित करने से अन्य फसलों की उपेक्षा हुई है, फसल विविधता कम हुई है, आर्थिक असुरक्षा बढ़ी है, तथा आहार में पोषण की कमी हुई है।

क्या किया जाने की जरूरत है -

- **फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना:** किसानों को दलहन, तिलहन और मोटे अनाज सहित फसलों की अधिक विविधता उगाने के लिए प्रोत्साहित करना, इन फसलों के लिए एमएसपी और खरीद सहायता प्रदान करना तथा उनके अनुसंधान और विकास में निवेश करना।

- **टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाना:** मृदा स्वास्थ्य को बहाल करने, कीट चक्र को तोड़ने और इनपुट आवश्यकताओं को कम करने के लिए फसल चक्र, बहु-कृषि और संरक्षण कृषि की ओर रुख करना।
- **जल प्रबंधन में सुधार:** जल-बचत प्रौद्योगिकियों में निवेश करें, कुशल सिंचाई विधियों को बढ़ावा दें, तथा भूजल संसाधनों के संरक्षण के लिए कम जल-प्रयुक्त फसलों को प्रोत्साहित करना।
- **अवशेष प्रबंधन को बढ़ावा देना:** किसानों को पराली जलाने के विकल्प उपलब्ध कराना, जैसे कि अवशेषों को शामिल करने के लिए मशीनरी या फसल अवशेषों को जैव ईंधन या पशु चारे के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करना।
- **कृषक शिक्षा एवं सहायता:** एकल कृषि के दीर्घकालिक जोखिमों और टिकाऊ प्रथाओं के लाभों के बारे में किसानों को शिक्षित करने के लिए विस्तार सेवाओं का विस्तार करना, साथ ही संक्रमण के लिए तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करना।

स्रोत: [Indian Express: Why Farmers Prefer Rice, Wheat](#)

